10

नारी शक्ति की प्रतीक

– भगिनी निवेदिता

अपने देश की बहुत कुछ कर गुजरने वाली महिलाओं से हमारा इतिहास भरा पड़ा है, परन्तु एक विदेशी महिला ने भारत के लिए जो कार्य किया, वह अनूठा है। भगिनी निवेदिता स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित होकर उनके आह्वान पर भारत की महिलाओं को शिक्षित करने के लिए भारत आई थी। उनका जन्म आयरलैण्ड में हुआ, परन्तु उन्होंने भारत भूमि में अपनी मातृभूमि के दर्शन किए और भारत की बेटी बनकर स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रांतिकारी भूमिका निभाई।

उनका पूरा नाम 'मार्गेट एलिजाबेथ नोबेल' था। उनके पिता का नाम 'सेमुअल रिचमण्ड़ नोबेल' व माँ का नाम 'मैरी इसाबेला' था। बचपन में ही इनके माता–पिता का देहांत हो गया था। इनका लालन–पालन नाना हमिल्टन द्वारा किया गया था। हमिल्टन आयरलैण्ड के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधारों में से एक थे। मार्गेट की शिक्षा लंदन चर्च के आवासीय विद्यालय में हुई।

मार्गेट को शिक्षण का कार्य अच्छा लगता था । अतः वह 17 वर्ष की उम्र में ही एक विद्यालय में पढ़ाने लगी। वह स्वयं द्वारा विकसित पद्धति से शिक्षा दिया करती थी। धर्म में रुचि होने के कारण चर्च की गतिविधियों में भी भाग लेती थी तथा अधिकांश समय अध्ययन, मनन एवं सत्य की खोज में ही लगाती थी ।

तभी एक घटना घटी, जो उनके जीवन को एक नया मोड़ देने वाली थी। एक संन्यासी का लंदन में आगमन हुआ। नाम था 'स्वामी विवेकानन्द'। स्वामी जी शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में ख्याति अर्जित कर अपने कुछ मित्रों के आग्रह पर इंग्लैण्ड आए थे।

मार्गेट की स्वामी जी से प्रथम भेंट यहीं हुई थी।

मार्गेट ने स्वामी जी के प्रवचन सुने, वाद–विवाद, तर्क–वितर्क किया और अपने आपको पूर्ण संतुष्ट कर लेने के उपरांत ही उन्होंने स्वामी जी को अपना आदर्श चुना और स्वामी जी के आग्रह पर उसने भारत आना तय कर लिया।

भारत आकर वो अत्यधिक प्रसन्न हुई। वे गंगा के किनारे वेलूर मठ की एक कुटिया में दो अन्य अमेरिकन महिलाओं के साथ रहने लगीं जो स्वामी जी की शिष्याएँ थीं। स्वामी जी ने मार्गेट को नया नाम निवेदिता दिया और आग्रह किया कि वह भगवान व भारत माता के चरणों में अपना जीवन अर्पित करें।

भगिनी निवेदिता ने विवेकानन्द के उपदेशों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करने के साथ–साथ कलकत्ता में लड़कियों का एक स्कूल भी आरम्भ किया। वहाँ छोटी लड़कियों को पढ़ाने लिखाने के साथ–साथ मिट्टी का काम, चित्रकारी का काम आदि भी सिखाया। जब कलकत्ता में महामारी फैली तो निवेदिता ने टोली बनाकर दिन–रात भूख–प्यास की चिंता किए बिना रोगियों की चिकित्सा, सेवा–सफाई आदि कार्य कर पीड़ितों की मदद की। उन्होंने अंग्रेजी समाचार पत्रों में अपील प्रसारित कर मदद माँगी व धन संग्रह भी किया। वह लेखन कला एवं बोलने में निपुण थी। इस क्षमता का उपयोग कर वह अपनी बात बड़े–बड़े समूहों तक पहुँचाने में सफल रही।

निवेदिता ने जब अंग्रेजों का भारतीयों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार देखा तो वह पूर्ण ताकत के साथ भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का समर्थन करने लगी। उन्होंने बंगाल विभाजन का विरोध किया। उन्होंने जगदीश चन्द्र बोस की उपलब्धियाँ विश्व पटल पर रखी और महर्षि अरविन्द के जेल जाने के बाद, उनके 'कर्मयोगी' पत्र के लिए संपादकीय लिखने का कार्य भी करने लगी।

उन्हें भारतीय स्त्रियाँ अधिक प्रभावित करती थीं। उन्हें लज्जा, विनम्रता, स्वाभिमान, सेवाभाव, निष्ठावान, ममत्व आदि की प्रतिमूर्ति दिखाई देती थी। वह समय–समय पर महिलाओं को लक्ष्मी बाई, अहिल्या बाई के वीरतापूर्ण कार्यों को भी याद दिलाती थी। उनकी दृष्टि जाति, प्रांत व भाषा आदि से ऊपर थी।

भगिनी निवेदिता ने भारत को अपनाने के बाद कभी भी अनुभव नहीं होने दिया कि वह एक विदेशी है। उन्होंने भारत के लिए जो किया उसे कोई अन्य नहीं कर सकता था। वह भी स्वामी

जी की तरह ही 44 वर्ष की अल्पायु में नीचे उद्धृत वेद की पावन ऋचाओं का वे सदैव स्मरण करती हुई संसार से विदा हो गई।

"असतो मा सद्गमयः
तमसो मा ज्योतिर्गमयः
मृत्योर्मा अमृतं गमयः।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

विदेशी	–	दूसरे देश का
आह्वान	–	पुकार / बुलावा
मातृभूमि	–	जन्मभूमि
पद्धति	–	तरीका
प्रवचन	–	उपदेश देना
तर्क–वितर्क	–	वाद–विवाद
बर्बरता	–	क्रूरता
संपादकीय	–	संपादक का लिखा / अग्रलेख
भगिनी	–	बहिन

उच्चारण के लिए

निवेदिता, विवेकानन्द, शिक्षित, आयरलैण्ड, स्वतंत्रता, मार्गेट एलिजाबेथ, नोबेल, सेमुअल, रिचमण्ड, समर्थन, स्त्रियाँ, आह्वान, पद्धति

सोचें और बताएँ

1. मार्गेट का पूरा नाम क्या था ?
2. मार्गेट को नया नाम निवेदिता किसने दिया ?
3. भगिनी निवेदिता किस देश से भारत आई थी ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–
   (मातृभूमि, आयरलैंड, शिक्षण, देहांत)

(क) भगिनी निवेदिता का जन्म ..... में हुआ, परन्तु उन्होंने भारत भूमि में अपनी ..... के दर्शन किए।

(ख) बचपन में ही इनके माता–पिता का ..... हो गया।

(ग) मार्गेट को ..... का कार्य अच्छा लगता था।

2. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

(अ) 17 वर्ष की उम्र में भगिनी निवेदिता ने कार्य प्रारंभ कर दिया था–

(क) समाज सेवा करना (ख) पढ़ाई करना

(ग) पढ़ाने का काम करना (घ) आन्दोलन करना ( )

(ब) स्वामी विवेकानन्द ने ख्याति अर्जित की

(क) भारतीय सम्मेलन में

(ख) विदेशी सम्मेलन में

(ग) शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में

(घ) राष्ट्रीय सम्मेलन में ( )

3. भगिनी निवेदिता के माता–पिता का क्या नाम था ?
4. भगिनी निवेदिता ने भारत देश के लिए कौन–कौन से कार्य किए ?
5. भगिनी निवेदिता को भारतीय महिलाओं की कौन–कौनसी विशेषताओं ने सर्वाधिक प्रभावित किया ?
6. जीवन की किस घटना ने भगिनी निवेदिता के जीवन को बदल दिया था ?
7. भगिनी निवेदिता वेद की कौनसी ऋचाओं का स्मरण करती थी ?

भाषा की बात

- निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखें

"असतो मा सद्गमयः
तमसो मा ज्योतिर्गमयः
मृत्योर्मा अमृतं गमयः"

- वीरता+पूर्ण मिलकर 'वीरतापूर्ण' शब्द बना। आप भी इस प्रकार 'पूर्ण' जोड़कर नए शब्द बनाकर उत्तरपुस्तिका में लिखें।

यह भी करें

- आप भी उन महिलाओं के नाम लिखिए जिन्होंने भगिनी निवेदिता की तरह देश के लिए कार्य किए हो–

क्रम संख्या	महिला का नाम	किए गए कार्य

- किन्हीं चार महान नारियों के चित्रों का संकलन करें।

एक नारी पढ़ेगी, सात पीढ़ी तरेगी।